



মমোৰঙি খুৰাং ৰাভা ভাষা প্ৰৱেশিকা রাভা ভাষা প্ৰবেশিকা RABHA PRIMER



CIIL-NCERT Primer Series

ई-पाठशाला

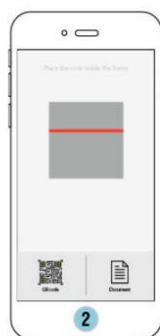
क्यूआर (QR) कोड से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पॉन्स कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला epathshala.nic.in के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।



प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें



क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें



स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें



लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें



उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें—
<https://epathshala.nic.in/topics.php> पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

 दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। दीक्षा का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।



अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें



अपनी भूमिका चुनें—शिक्षक या विद्यार्थी



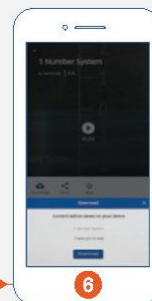
पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें



क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें



कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें



क्लिक करके क्यूआर कोड से संबंधित ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें—
<https://diksha.gov.in/resources> पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।



“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

মমোৰঙি খুৰাং
ৰাভা ভাষা প্ৰৱেশিকা
রাভা ভাষা প্ৰৱেশিকা
RABHA PRIMER



ভাৰতীয় ভাষা সংস্থান
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in



ৰাষ্ট্ৰীয় শৈক্ষিক অনুসন্ধান আৰু প্ৰশিক্ষণ পৰিষদ
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

মমোৰঙি খুৰাং

ৰাভা ভাষা প্ৰৱেশিকা

রাভা ভাষা প্ৰৱেশিকা

RABHA PRIMER

A basal reader of Rabha alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors

Dinesh Prasad Saklani

Shailendra Mohan

Aleendra Brahma

Rimpi Borah

ISBN: 978-81-19411-23-8

First Edition: July, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024

All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: Shwetha K

Cover Photo: Rabha Language Resource Persons

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.



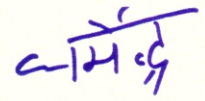
संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की तत्काल आवश्यकता है।

अतः हमने एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ माननीय प्रधानमंत्री जी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यधिक उपयोगी साबित होंगी।


(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

संजय कुमार, भा.प्र.से
सचिव

Sanjay Kumar, IAS
Secretary



भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
Government of India
Ministry of Education
Department of School Education & Literacy



संदेश

मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति को आकार देने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वह करती है। भाषा एक समूह की विशेषताओं को परिभाषित करने के साथ-साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान संचार का माध्यम भी है। भाषा सभ्यता को आगे बढ़ाने और मनुष्य को अधिक उन्नत स्थिति तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा के माध्यम से विज्ञान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के रूप में प्रसारित ज्ञान देश भर के सभी बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में सीखने-सिखाने पर बल देती है। भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन के उद्देश्य से एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के अथक् प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में सीखने सिखाने हेतु प्रवेशिकाओं का विमोचन किया जा रहा है। ये प्रवेशिकाएँ मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने और बच्चों में विभिन्न अवधारणाओं की समझ विकसित करने में सहायक होंगी। साथ ही राज्यों और शैक्षिक एजेंसियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकेगी। हमारे लिए इन प्रवेशिकाओं को शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षाविदों तथा अन्य हितधारकों तक पहुँचाना गर्व की बात है।

इस अवसर पर मैं प्रवेशिकाओं के निर्माण से जुड़े सभी सदस्यों, विशेषज्ञों एवं विभिन्न भाषायी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके बहुमूल्य योगदान से इन प्रवेशिकाओं को विकसित करना संभव हो पाया है। मुझे विश्वास है कि इन प्रवेशिकाओं से विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों, प्रधानाध्यापकों और शिक्षा के अन्य हितधारक लाभान्वित होंगे।

(संजय कुमार)

प्राक्कथन

भाषा समाज का एक अभिन्न अंग है। भाषा संस्कृति का एक उपादान है, समुदाय की पहचान है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी है। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है-एक ओर भारत की भाषिक विविधता को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। साथ ही यह भी बताता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारतीय संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं के मुद्दों पर हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित बिंदु है कि बच्चों के पास भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों-ये किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को 'बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह मजबूत नींव न केवल भविष्य में विद्यालय एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित होंगे।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं (प्राइमर्स) का लक्ष्य छोटे बच्चों या अन्य भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से सुपरिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों; जैसे- बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी। शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

जुलाई 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

भूमिका / Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्यधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएँ बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गए अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilised efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognising, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarises children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

ভাৰতবৰ্ষ এখন বহুভাষিক ৰাষ্ট্ৰ। ভাৰতৰ বিভিন্ন প্ৰান্তত বিভিন্ন ভাষা প্ৰচলিত। আমাৰ দেশৰ সাধাৰণ বৈশিষ্ট্য হৈছে যে আমি মৌখিকভাৱে একাধিক ভাষা ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰোঁ আৰু বিভিন্ন ভাষা ব্যৱহাৰ কৰি আনন্দ ল'ব পাৰোঁ। বহুভাষিকতাই আমাক সকলোকে একত্ৰিত কৰি ৰাখিছে। ২০২০ ৰ এন ই পি (NEP) য়ে এই কথা প্ৰমাণ কৰে যে বহুভাষিক প্ৰকৃতি দেশখনৰ মহত্বপূৰ্ণ সম্পত্তি আৰু শক্তি, যি দেশৰ আৰ্থ-সাংস্কৃতিক, অৰ্থনৈতিক আৰু শৈক্ষিক উন্নয়নৰ বাবে আৱশ্যক। ইয়াত শিক্ষাৰ প্ৰতিটো স্তৰতে বহুভাষিকতাক প্ৰসাৰিত কৰাৰ পৰামৰ্শ দিয়া হৈছে যাতে শিক্ষাৰ্থীসকলে নিজৰ ভাষাত অধ্যয়ন কৰাৰ সুযোগ লাভ কৰে। সকলো

ভাৰতীয় ভাষাত পাঠদান-শিক্ষণ সামগ্ৰী সৃষ্টি কৰিলে এই বছৰাধিক সম্পদ আৰু অধিক চহকী হ'ব আৰু 'বিকশিত ভাৰত'ৰ দৃষ্টিকোণক অধিক অৰিহণা যোগাব। ভাৰতৰ প্ৰত্যেক ঠাইৰ ভাষিক আৰু সাংস্কৃতিক বৈশিষ্ট্যসমূহ একগোট কৰিবৰ কাৰণে এন ই পি ২০২০ ৰ অনুৰূপ প্ৰাৰম্ভিক গ্ৰেড প্ৰাইমাৰ প্ৰস্তুত কৰাৰ প্ৰয়োজনীয়তা আছে। এই প্ৰাইমাৰসমূহৰ উদ্দেশ্য হৈছে প্ৰাথমিক শ্ৰেণীৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলক পঢ়া-লিখাত দক্ষতা বৃদ্ধি কৰোৱাৰ লগতে সৃষ্টিশীলতা আৰু সমালোচনাত্মক চিন্তাধাৰাক উৎসাহ যোগোৱা। এই প্ৰাইমাৰবোৰে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলক এটা বা ততোধিক আখৰৰ গোটৰ অৰ্থৰ সৈতে পৰিচয় কৰোৱাই দিব। যেনে- এটা আখৰ শব্দৰ আদ্যস্থান, মধ্যস্থানত আৰু অন্ত্যস্থানত কিদৰে ব্যৱহাৰ হয় আৰু শেষত পাঠটোত বৰ্ণনা কৰা আখৰবোৰৰ সহায়ত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে লিখাৰ অভ্যাস কৰিব পাৰিব। ছন্দ মিলাই লিখা অকণিৰ গীতসমূহে শিশুসকলক তেওঁলোকৰ ভাষা বিকাশত সহায় কৰিব আৰু সজ্ঞানমূলক দক্ষতা আৰু স্মৃতিশক্তি বৃদ্ধি কৰিব।

জুলাই ২০২৪
মৈসূৰু

প্ৰো. শৈলেন্দ্ৰ মোহন
নিৰ্দেশক
ভাৰতীয় ভাষা সংস্থান, মৈসূৰু

CIIL-NCERT Primer Series: Rabha Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi

Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru

Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra Prasad Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology (CIET),
NCERT, New Delhi

Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi

Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Ravindra Kumar, Associate Professor, CIET, NCERT, New Delhi

Coordinator

Aleendra Brahma, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru

Co-Coordination

Salam Brojen Singh, RP (Teaching) in Manipuri, North Eastern Regional Language Centre (NERLC),
(CIIL), Guwahati

Gayotree Newar, RP (Teaching) in Nepali, NERLC, (CIIL), Guwahati

Milan Subba, RP (Teaching) in Nepali, NERLC, (CIIL), Guwahati

Resource Persons

Anjali Rabha, Office Assistant, Office of the Competent Authority, Assam

Bhola Rabha, Hollaidanga, Tikrikilla, West Garo Hills, Meghalaya

Maya Rabha, FLW, AHANA PROJECT-NE, NCPI+

Rajkumar Rabha, Chief Secretary, Bebak Rabha Kraurang Runchum, Goalpara, Assam

Rupak Kumar Rabha, Teaching Associate (Rabha), Department of MIL & LS, Gauhati University,
Guwahati

Reviewer

Upen Rabha Hakacham, Professor, Department of Assamese, Gauhati University, Guwahati

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission, CIIL, Mysuru

Jewsnrang Basumatary, RP (Teaching) in Bodo, NERLC, (CIIL), Guwahati

Saravanan A S, Graphic Editor, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages
(SPPEL), CIIL, Mysuru

Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru

Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

ৰাভা আদিপাঠখন কেনেকৈ পঢ়ুৱাব লাগিব

২০২০ চনৰ নতুন ৰাষ্ট্ৰীয় শিক্ষা নীতি আৰু ২০২২ চনৰ ৰাষ্ট্ৰীয় পাঠ্যক্ৰম ৰূপৰেখাৰ অধীনত তিনি বছৰৰপৰা আঠ বছৰ বয়সৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলক তেওঁলোকৰ মাতৃভাষা, ঘৰুৱা ভাষা, স্থানীয় ভাষা আৰু আঞ্চলিক ভাষাত শিক্ষা প্ৰদান কৰাৰ ব্যৱস্থা কৰা হৈছে। কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰে ৩ বছৰৰপৰা ৫ বছৰ বয়সৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীক প্ৰাথমিক পৰ্যায়ত মৌলিক সাক্ষৰতা প্ৰদানৰ ব্যৱস্থা কৰিছে। সেয়েহে ৰাভা ভাষাত লিখা পাঠ্যপুথিখনত সৰু সৰু অকণিৰ কবিতা আৰু শব্দৰ জৰিয়তে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ দ্বিধাবোধ আঁতৰাই তেওঁলোকৰ মৌখিক ভাষাৰ বিকাশৰ ওপৰত গুৰুত্ব দিয়া হৈছে। পাঠ্যপুথিখনত ৰাভা ভাষাৰ বৰ্ণমালাৰ পৰিচয় কৰোৱাৰ লগতে ছবিৰ সহায়ত শব্দৰ পৰিচয় দিবলৈ যত্ন কৰা হৈছে।

ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে নিজৰ মাতৃভাষাত পঢ়িবলৈ আৰু লিখিবলৈ শিকাৰ সমান্তৰালভাৱে কেনেকৈ হিন্দী আৰু ইংৰাজী ভাষা পঢ়িব আৰু লিখিবলৈ শিকিব পাৰে, সেই বিষয়ে ২০২২ চনৰ ৰাষ্ট্ৰীয় পাঠ্যক্ৰমৰ ৰূপৰেখাত বিতংভাৱে লিখা আছে। সেয়েহে ৰাভা ভাষাৰ বৰ্ণমালা পাঠ্যপুথিখনত শিশুৰ মাতৃভাষাৰ লগতে অসমীয়া ভাষাৰ শব্দ অন্তৰ্ভুক্ত কৰা হৈছে। এই শব্দসমূহ শিশুৰ চাৰিওকাষৰ পৰিচিত পৰিৱেশৰপৰা সংগ্ৰহ কৰি পাঠ্যপুথিখনত সন্নিৱিষ্ট কৰা হৈছে।

বহুভাষিক শিক্ষাৰ মূল লক্ষ্য হৈছে, ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলৰ ঘৰুৱা ভাষাত পঢ়া-লিখাৰ দক্ষতা বৃদ্ধি কৰা। ৰাভা আৰু অসমীয়া ভাষাত উপস্থাপন কৰা পাঠ্যপুথিখন কণ কণ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ বাবে প্ৰণয়ন কৰা হৈছে। পাঠ্যপুথিখনৰ প্ৰধান লক্ষ্য হৈছে অকণিৰ কবিতা আৰু ছবিৰ জৰিয়তে শিশুৰ বৌদ্ধিক আৰু মানসিক বিকাশ কৰা। দ্বিতীয়তে, ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলক ভাষা শিক্ষণৰ বাবে আখৰৰ লগতে শব্দৰ সৈতে পৰিচয় কৰা।

পাঠ্যপুথিখন কেনেকৈ ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে সেই বিষয়ে তলত উল্লেখ কৰা হৈছে—

ধ্বনি পৰিচয় : ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে ছবিখন দেখাৰ পিছত বস্তুটোৰ নাম ক’ব। ছবিখনৰ নামটো কি ধ্বনিৰে আৰম্ভ হৈছে সেই কথা শিক্ষকে ছাত্ৰক সুধিব। যেনে- ‘অঙে’ ছবিখন দেখাৰ পিছত ইয়াৰ আৰম্ভণি /অ/ ধ্বনিৰে হৈছে বুলি ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে বুজি পাব।

বৰ্ণমালাৰ পৰিচয় : ‘অ’ আখৰটো দেখিবলৈ কেনেকুৱা হয় শিক্ষকে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীক শিকাব। পাঠ্যপুথিত দিয়া হোৱা কিছুমান শব্দৰপৰা ‘অ’ আখৰটো বিচাৰি উলিয়াবলৈ ক’ব। ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে তিনি-চাৰিটা শব্দৰপৰা ‘অ’ আখৰৰ ধ্বনি উচ্চাৰণ কৰিব আৰু ‘অ’ আখৰটো লিখাৰ অভ্যাস কৰিব।

পঠন : ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে ছবি চাই শব্দবোৰৰ নাম ক’ব। ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে বাওঁফালৰপৰা সোঁফাললৈ আঙুলিৰে নিৰ্দেশ কৰি ‘আফে’ শব্দটো পঢ়িব। ‘অ’-ৰে আৰম্ভ হোৱা আন আন শব্দবোৰ পঢ়ি তেওঁলোকে ‘অ’ আখৰটো বিচাৰি উলিয়াব আৰু ক’বলৈ শিকিব। আদ্যস্থান, মধ্যস্থান আৰু অন্ত্যস্থানত /অ/ ধ্বনিৰ ব্যৱহাৰ সম্পৰ্কে শিক্ষকে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীক ক’ব। ‘অ’ পঢ়ি থাকোঁতে শিক্ষকে ‘অঙে’ শব্দটোৰ লগতে আন তিনি-চাৰিটা শব্দ বৰ্ভত লিখিব। এজন এজনকৈ সকলো ছাত্ৰ-ছাত্ৰীক বৰ্ভৰ ওচৰলৈ মাতিব আৰু উচ্চাৰণ কৰি লিখিবলৈ দিব।

আখৰ চিনাকি আৰু শব্দ পঢ়াৰ বাবে ব্যৱহাৰ কৰা সকলো শব্দ শিশুৰ পৰিচিত জগতখনৰপৰা লোৱা হৈছে। পাঠ্যপুথিখনত থকা ছবিবোৰ চাই ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে শব্দবোৰৰ লগত পৰিচয় হ’ব। শিক্ষকে এটা শব্দ লিখি তাৰ প্ৰতিটো আখৰ পৃথকে পৃথকে ক’ব। আখৰবোৰ যোগ কৰি শব্দটো পঢ়িবলৈ শিকোৱা হ’ব। এজন ছাত্ৰই এটা শব্দ পঢ়িব আৰু আন ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে তেওঁৰ লগত পুনৰাবৃত্তি কৰিব। ইয়াক ‘সামূহিক পঠন’ বুলি কোৱা হয়।

প্ৰতিটো পাঠৰ লগত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলৰ বাবে আখৰ লিখাৰ ক্ৰিয়া-কলাপ দিয়া হৈছে। শিক্ষকে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলক ক্ৰিয়া-কলাপসমূহ কৰাত সহায় কৰিব। ক্ৰিয়া-কলাপসমূহ শিকাৰ অনুশীলন আৰু মূল্যায়নৰ বাবে দিয়া হৈছে। পাঠৰ ক্ৰিয়া কলাপসমূহ কৰাওঁতে স্ব-শিকন আৰু দলীয় শিকনত গুৰুত্ব দিব।

পাঠত থকা অকণিৰ কবিতাসমূহৰ উপৰি স্থানীয়ভাৱে প্ৰচলিত গীত-মাত আদি শিক্ষকে সংগ্ৰহ কৰি অনুশীলন কৰোৱাব। পাঠত থকা ছবিৰ উপৰি সংগতি থকা আন আন ছবি উপস্থাপন কৰিব আৰু অভিনয় কৰোৱাৰ সুবিধা থকা পাঠসমূহ অভিনয় কৰি দেখুৱাব। ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ চিন্তাৰ বিকাশ হোৱাকৈ কিছুমান ক্ৰিয়া-কলাপ দি শিক্ষকে অধিক অনুশীলন কৰোৱাব।

পাঠ্যপুথিখনত ভাষা আৰু পৰিৱেশৰ বিষয়বস্তু সমন্বিতভাৱে দিয়া হৈছে। গতিকে ইয়াত ভাষা শিক্ষাৰ লগতে পাঠ অনুযায়ী সন্নিৱিষ্ট হোৱা পৰিৱেশৰ কথাবোৰ শিকাব।

কামায়নি ছেৰাবিজনো চিয়ে খলং হাদামতি ছেৰা বীতনা চাখীৰ :

জোতেক ছেৰা :

:



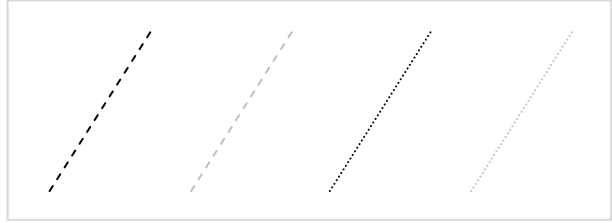
দীগ্রীপ ছেৰা :

:



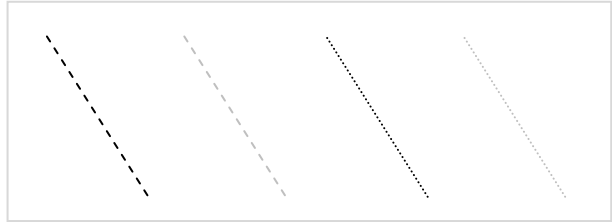
হেংজৰ ছেৰা ১ :

:



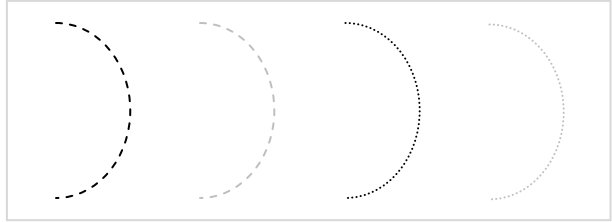
হেংজৰ ছেৰা ২ :

:



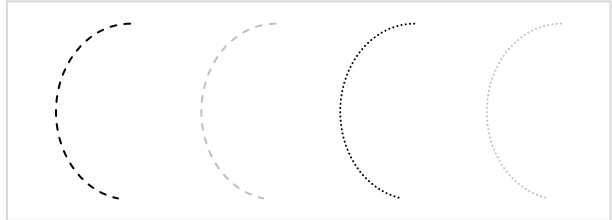
বেংকয় ছেৰা ১ :

:



বেংকয় ছেৰা ২ :

:



খহংচুজেপ : কীত্ৰাংগিৰ্ ত্ৰীংছা-ত্ৰীংছিতাঙা বেগান্দা ছুফং ৰীমে খলং হাদামতি ছেৰা বীনা লাগিয়া তুনুকে কীত্ৰাঙে ৰাখুদং নেমো ।

ছতাং তীমাক

(স্বৰবৰ্ণ)

অ	আ	ঐ	ই
উ			
এ	ও	ঔ	

গদং তীমাক

(ব্যঞ্জনবৰ্ণ)

ক	খ	গ	ঘ	ঙ
চ	ছ	জ	ঝ	
ত	থ	দ	ধ	ন
প	ফ	ব	ভ	ম
	ৰ	ল	ৱ	
	হ	য়	ং	

অ

অঙে

কেঁকোসাপ

পান কাৰাং পানখলেঙি
অঙে ক্রীঙা
জুজুৰং নাকৰ পায়ে নাথামা।



অকছি

ওঁটেঙাৰ দৰে এবিধ ফল

অৰেক

গাহৰি

অকতোপাছ

অক্টোপাছ

অ

অ

অ

আ

আফে

তৰা

বাংকাবাং বাংগ্ৰে নায়া
বাংকাবাং আফেবা নায়া
মমো ছাব্বা বাছেকতি
কাতোরে চিয়া।



আয়া

আপ

আখর

মা

আইনা

আখৈ

আ

আ

আ

আ

আমা

মিঠাই

কায়পিচু আমা ছানা নামা
ছানা মানচাদং খাপমা নামা।



আঁচু

ককা

আঁৰিনা

আঁৰিমাছ

আঁখা

উফি

আ

আ

আ

ই

ইনজিল

চশমা

জুজু বিদিৰং ইনজিল কানে
ইছৰনি আৰদি-চাগ পৰায়তা।



ইতা

দাইদি

কুই

ইটা

বৰকাঁহ

তামোল

ই

ই

ই

উ

উত

উট

উত কীনদাম চুৰচুৰ
হাছিদামি দাৰথুঙা গৰগৰ।



উ

উকিল

তোবাউ

উকীল

ফেঁচা

উ

উ

উ

এ

এতা

কাঠপোক

পুচিকায় পানাদিগি
তোরা এতা-চং
আন থাম হাচু হাকাপি
তোরা চিঙি ছোং।



এন্দা ফাং

এতামুক

এনদ্রাকেন

এৰা গছ

এৰি কাপোৰ

নীলা চকু

এ

এ

এ

ও

ওলা

ওলকচু

ওলা মি ছানা থোৰা
বীৰা ওলা বজোৰা।



ওল কুৰি

ওলকৰি

নাওৰা

ৰইনা

মেবাও

কোমোৰা

ও

ও

ও

ঐ

ঔংকুৰ

গৰ্জন

মাছা ঔংকুৰা
মাছিবিজান কীৰে কীৰে জাৰা।



ঐ

ঐ

ঐ

ঐ

ঐ

ঐ

ঐ

ঐ

ঐ

ক

কাওছা

কিতাপ

কাওছা পৰায় কায়চুং
গংচাৰাঙে তাতং।



কদাল

নাকৰ

মিমুক

কোৰ

কাণ

কাঠফুলা

ক

ক

ক

খ

খদাম

গাৰু

অ তুখুৰ অ তুখুৰ
গুৰ্ গুৰ্ গুৰ্
কানিচং কানিচং বিছি বংপুৰ।



খচেং

তুখুৰ

ৰংখ

ফণি

কপৌ চৰাই

শিলগুটি

খ

খ

খ

গ

গান্দায়

গাঁড়

গান্দায়নি কুংথং চেপচেপ
কানবা খৰথাপ পাকে গেলদেপ।



গৰায়

লাংগন

চাগ

ঘোঁৰা

নাঙল

পুথি

গ

গ

গ

ঘ

ঘোপা

গুহা

হাচু ঘোপা ঘোপা
বাদুলি মোকা
মমো কীৰদং ৰাউৰাউ খাপা।



ঘীনা

ঘোনা

ঘেৰক

ঘৰিয়াল

আঠুৱা

ঘিলা

ঘ

ঘ

ঘ

ঙ

জুঙল

যুঁরলি

মাছু মাঙানিং বীজামা জুঙল
পাকে
বাংবাং হাল খাৰা নাংগল
পাকে।



হাঙাৰ

জেওৰা

নাৰেঙা

ৰবাব টেঙা

লাঙাপুক

আকাশীলতা

ঙ

ঙ

ঙ

চ

চৰেং

জাকৈ

চৰেং পেকে না বতা
খুজেং পেকে হাখাৰ খতা।



চুকুং

খাৰচাক

বাংফাচি

শামুক

লেছেৰা মাহ

বৰষুণ

চ

চ

চ

ছ

ছ

মহ

ছ কাকদং মেলেৰিয়া চাঙা
মেলেৰেয়া পাংদং কায় ছিয়া।



ছাম

ছাছা

মিছি

উৰাল

শহাপহু

ম'হ

ছ

ছ

ছ

জ

জাপ

বিচনী

বাংছাং তুংদং জাপ লাগিয়া
গীমাৰ দগোদং চিকা লাগিয়া।



জামাক্ৰা

তজায়

তোমাজি

মাকৈ

লেতেকু

দহিকতৰা

জ

জ

জ

বা

ঝালুক

জলকীয়া

ঝালুক ছাকছাক মুনেতা
উকায় ছানা পায়প্রক পুৰেতা।



ঝাঝা

ঝালা

ঝাংকা

নিজঝা

মোনা

এবিধ বহল চালনী

ঝা

ঝা

ঝা

ত

তাপক

পখিলা

তাপক পুৰা ছাৰি-ছাৰি
মচো ক্ৰাণ্ডা ফাৰি-ফাৰি।



তৰেয়া

তৰাং

কচপাত

ভেন্দি

চিলনী

চামুচ

ত

ত

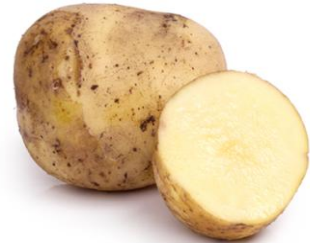
ত

থ

থোপ

চৰাইৰ বাঁহ

চুকিয়া থোপ ৰাআ নোক
ছাৰ-ছাৰ
বিদিনি দাংগায় নুকে পুৰা
ফীৰ-ফাৰ।



থাল

তাথেং

খানথে

কাঁহী

ভৰি

আলু

থ

থ

থ

দ

দাম

ঢাৰি

দাম ছানি ছানি
খক্ ছানি ছানি
চিং মামা ঝিবাং
ইকায় কাথা কানি।



দোকা

মাদা

গদা

খৰাহি

ভালুক

গদা

দ

দ

দ

ধ

ধেংকিয়া

ডেঁকীয়া

ধেংকিয়া মি ছানি ছানি
ফোকচাক ফাবায় লাগিয়া
বায়নি।



ধৰায়

ধপ

ধেধেনা

গাভৰু

বটগছ

গেদগেদী মাছ

ধ

ধ

ধ

ন

না

মাছ

নানি মাজাৰি মাগুৰ না থোৱা
ইকায় কাথা চিঙি আয়া কানিয়া।



নকো

বানথো

খেন

দৰ্জা

বেঙেনা

কেঁকোৰা

ন

ন

ন

প

পচো

আম

পাৰ পাৰেতা পাৰ পাৰেতা
বিবিনি নকুবাৰকায়
পচো নামেতা।



পাংচুং

কাপজি

হামপা

কাঁঠাল

নেমুটেঙা

কপাহ

প

প

প

ফ

ফেথে

কেঁটেলা পছ

ফেথেনি কানতি ছু
থ্বেং থ্বেং
উরো বীমানেকে তাছি
কানত্রাং তাৰেং।



ফাতি

পাণ

ছুফং

কলম

চাফা

ভৰিৰ তল

ফ

ফ

ফ

ব

বুগিলা

বগলী

বুগিলা বক বক
মায় ছাকায় চুকিয়া বক।



বান

বিবুৰ

ৰাবু

কুলা

মকৰা

পানীলাও

ব

ব

ব

ভ

ভাওয়ায়

ভঁইৰা

ভাওয়ায় থে লাৱা লাৱা থেতেতা
মমোৰং ছানানেকে কাচি
মনোকেতা।



ভৰং

টঙি ঘৰ

লুভাক

ভেকুলী

ভেৰা

ভেড়া

ভ

ভ

ভ

ম

মিংকু

মেকুৰী

মিংকু ক্ৰীড়া গৰমেং গৰমেং
তো ছাবানি দীমা ক্ৰেং।



মাছা

বাঘ

পামথে

ঔটেঙা

নাৰিমা

তিয়ঁহ

ম

ম

ম

ব

বেথে

কল

মুনকায় বেথে আং ছানো আখাছা
বাখনো নাৰঙা গছা গছা।



ৰাজা

বাৰছিং

পাজাৰ

ৰজা

জোনাকী পৰুৱা

ৰাভা গামোচা

ব

ব

ব

ল

লোতা

ঘটি

চায় ঝুঙে জা থাল লোতা নাতা
ছাৰাও ছাৰাও ভংচা উনা।



লীগা

দলেং

ছাংখোলা

লগৰীয়া

দোলনা

বৰটোকোলা

ল

ল

ল

ৰ

লেওৱা

লতা

জেঠ ৰাংগ্ৰেতি বায়খো চাঙা
চিংবা লেওৱা বীতনা ৰেঙা।



কাংকালেৱা

নেৱাল

বাংকোৱা

তিতাকেষেলা

নেউল

হোলোঙা মাৰি

ৰ

ৰ

ৰ

হ

হাচু

পাহাৰ

হাচু বোমায় বোমায়
চিকা নালা বয়া
চিং মমো চিকাৰুকাই
চাং গদাবোয়া।



হীতি

হাতী

হাংছিং

হাঁহ

চাহা

চাহ

হ

হ

হ

য়

ৰায়চাক

কলপাত

হাচুইনি ৰায়চাক দালাং দালাং
ছানা থোৱা মায় বাৰাং বাৰাং।



য়াক মাছু

য়াক

ফায়দাম

গাল

ছুমথায়

বাঙি

য়

য়

য়

ং

বাংছাং

সূর্য

বাংখোপ তংচা বাংছাং নায়নায়
ফাৰ চাংদং বাংগ্ৰেবা নায়নায়।



ছছেং

ৰংখ

চেনতেলেং

মাখি

শিল

তেতেলী

ং

ং

ং

ছতাং তীমাক	ছতাং আংকা	তুনুকছিনি	চাপ
অ	়	নক	
আ	া	ফাকাম	
ই	ি	জিংগা	
আ	ী	কীমবা	
উ	ু	খুছুং	

ছতাং তীমাক	ছতাং আংকা	তুনুকহিনি	চাপ
এ	ে	ৰেথে	
ও	ো	তোপা	
ঔ	ৌ	ৰৌনা	

ছা নি পাৰা নিংছি চিকিনা জায় :

১	ছা		1
২	নিং		2
৩	থাম		3
৪	ব্রি		4
৫	বীং		5
৬	ক্রোব		6
৭	ছিন্		7
৮	গিন্		8
৯	ছুকু		9
১০	হাছি		10

১১	ছিছা		11
১২	ছিনিং		12
১৩	ছিথাম		13
১৪	ছিব্রি		14
১৫	ছিবাং		15
১৬	ছিক্রোব্		16
১৭	ছিছিন্		17
১৮	ছিগিন্		18
১৯	ছিছুকু		19
২০	নিংছি		20

কামায় বাখুকায় জায়াংকা বিজান ছু :

১	১	১	১	
২	২	২	২	
৩	৩	৩	৩	
৪	৪	৪	৪	
৫	৫	৫	৫	
৬	৬	৬	৬	
৭	৭	৭	৭	
৮	৮	৮	৮	
৯	৯	৯	৯	
১০	১০	১০	১০	

11	11	11	11	
12	12	12	12	
13	13	13	13	
18	18	18	18	
14	14	14	14	
16	16	16	16	
19	19	19	19	
1b	1b	1b	1b	
1n	1n	1n	1n	
20	20	20	20	

অসমীয়া তীমাক ছাৰি

(অসমীয়া বৰ্ণমালা)

অ আ ই ঈ

উ ঊ ঋ ঌ

এ ঐ ও ঔ

ক খ গ ঘ ঙ

চ ছ জ ঝ ঞ

ট ঠ ড ঢ ণ

ত থ দ ধ ন

প ফ ব ভ ম

য ঞ ল ৱ

শ ষ স হ

ক্ষ ড ঢ য়

ং ঁ ং ঃ

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala 



For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to <https://epathshala.nic.in/topics.php> and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA** 



For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to <https://diksha.gov.in/resources> and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-I (54)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
1	ANAL	12	HALABI (HALBI)	23	KONDA	34	MANIPURI	45	SANTALI (WEST BENGAL)
2	ANGAMI	13	HMAR	24	KORKU	35	MAO	46	SAVARA (SORA)
3	AO	14	JATAPU (KUVI)	25	KOYA	36	MISHMI	47	SHERPA
4	ASSAMESE	15	JUANG	26	KUI	37	MISING	48	SÜMI (SEMA)
5	BHUTIA	16	KABUI (RONGMEI)	27	KUKI	38	MIZO	49	TAMANG
6	BODO	17	KARBI	28	KURUKH/ORAO	39	MOGH	50	TANGKHUL
7	DEORI	18	KHANDSHI	29	KUWI	40	MUNDARI	51	TANGSA
8	DESIA	19	KHARIA	30	KUZHLE (KHEZHA)	41	NEPALI	52	TIWA (LALUNG)
9	DIMASA	20	KINNAURI	31	LIANGMAI	42	NYISHI (NISSI)	53	TULU
10	GADABA (GUTOB)	21	KISAN (KUNHU)	32	LIMBU	43	RAI	54	WANCHO
11	GARO	22	KODAVA (COORGI/KODAGU)	33	LOTHA	44	SANTALI (ODISHA)		

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-II (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
55	ADI	60	HO	65	KOM	70	MARAM	75	RENGMA
56	BHUMIJ	61	KHIAMNIUNGAN	66	KONYAK	71	NOCTE	76	SHINA
57	CHANG	62	KOCH	67	LADAKHI	72	PASHTO	77	TAMIL
58	GONDI	63	KODA (KORA)	68	LEPCHA	73	POCHURY	78	TIBETAN
59	HALAM	64	KOLAMI	69	MARA (LAKHER)	74	RABHA	79	YIMKHIUNG (YIMCHUNGRE)

PRIMER DEVELOPMENT IN PROGRESS (45)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
80	ARABIC/ARBI	89	GUJARATI	98	LAHAULI	107	MUNDA	116	SANTALI (JHARKHAND)
81	BALTI	90	HINDI	99	LAHNDI	108	NICOBARESE	117	SINDHI
82	BENGALI	91	KANNADA	100	LAI (PAWI)	109	ODIA	118	TELUGU
83	BHILI/BHILLODI	92	KASHMIRI	101	MAITHILI	110	PAITE	119	THADO
84	BISHNUPURIYA (BISHNUPURIYA MANIPURI)	93	KHASI	102	MALAYALAM	111	PARJI	120	URDU
85	CHAKHESANG	94	KHOND/KONDH	103	MALTO	112	PHOM	121	VAIPHEI
86	CHOKRI	95	KOKBOROK (TRIPURI)	104	MARATHI	113	PUNJABI	122	ZELIANG
87	DOGRI	96	KONKANI	105	MARING	114	SANGTAM	123	ZEME (ZEMI)
88	GANGTE	97	KORWA	106	MONPA	115	SANSKRIT	124	ZOU



भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages

(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006

☎ 0821 2515820 (Director) / ✉ ada-ciilmys@gov.in

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training

Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016

☎ 011 2696 2580 / ✉ dceta.ncert@nic.in